आचार्यश्री महाप्रज्ञ का वक्तव्य

लाडनूं 22.6.09

कल का दिन था। भीड़, कोलाहल का दिन। आज मेरी धारणा और पुष्ठ हुई है सारपूर्ण वक्तव्य मंदी के वातावरण में छोटी परिषद में होना चाहिए। आयोजन में हो हल्ले जैसे ही होता हैं आज पहले गीत सुने अच्छे गीत लगे। छोटे सपत्क मण्डल का संवाद सुना अच्छा लगा, साध्वी विश्रुत विभा ने जो अध्ययन का आकलन किया एक व्यवस्थित रूप में उसकी रूपरेखा थी और विश्रुत विभा का अच्छा व्यक्तव्य हुआ, साध्वी प्रमुखा ने इतना अच्छा वक्तव्य दिया आश्चर्य हुआ कि इतनी उलझी हुई क्यों है पर तीन शब्दों ने समाधान दे दिया - विचारातीत, तर्कातीत और शब्दातीत। दूसरा होता तो 51 कल्याणक दे देता। इतना अच्छा व्यवस्थित अब ऐसा नियम बना लें बड़ी परिषद में समाज के काम की बात कहनी चाहिए विचारपूर्ण वक्तव्य होने चाहिए। और जो काम आवश्यक होते हैं वे शांत सभा में, छोटी परिषद में होने चाहिए।

मुझे आज बहुत अच्छा लगा, मुझे प्रसन्नता है युवाचार्यजी ने सारा निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिया और कल सुना एक बात अच्छी नहीं लगी। लगी गुरुदेव ने मेरे साथ बहुत न्याय किया किंतु मुझे यह अच्छी नहीं लगा शायद दसों बार कहा होगा कि मैं तुम्हारे साथ न्याय नहीं कर रहा हूं। पर विवशता है इनको प्रारंभ से ही इतना व्यस्त बना दिया कि समय निकालना भी मुश्किल है। विविशता अवस्था की भी और जो काम है, गुरुदेव का सौंपा हुआ कि तुम्हें एक काम करना है आराधना का भी। फिर भी मुझे संतोश है कि महाश्रमण केवल व्यवस्था कुशल नहीं रहे हैं, बड़ा काम हुआ है शायद कुछ दिनों बाद आएगा ''जैन पारिभाशिक कोश'' हिन्छी और अंग्रेजी दोनों में है, जो एक स्मारक जैसा कार्य है। इतना अच्छा काम हुआ है और आगम के काम में भी लगे हुए हैं तो मैं यह चाहता हूं हमारे आयोजन हो उसमें ज्यादा बोलने की आवश्यकता नहीं है। विचारपूर्ण अच्छा बोलना है और कुछ देना है, उनके लिए हम एक दो, तीन विकास होना चाहिए किस प्रकार सुव्यवस्थित प्रणाली के द्वारा अपनी बात को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

मैं चाहता हूं हमारे आयोजन हो ज्यादा बोलने की जरूरत न हो जिनको अच्छा बोलना हो , सारपूर्ण बोलना हो कुछ देना हो उनके लिए एक-दो-तीन कोई आपति नहीं विकास होना चाहिए , किस तरह वक्त बोल रहे हैं उसे सुनें कि सारपूर्ण तरीके से कैसे अपनी बात को व्यक्त कर रहे हैं।

अब मैं चाहता हूं कि हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियां, श्रावक-श्राविकाएं चारों समाज, एकांगी न हो प्रधान गोणता तो रहेगी पर एक में प्रधानता दूसरे में गोण चाहे जो भी प्रवृत्तियां हो कोई दूसरे में गोण।

अपने बारे में कहूं तो एक यह है सप्ताह में एक दिन एकांतवास। अभी संभवतः मंगलवार को किया है। सामान्यतः अभी मंगलवार है वार परिवर्तन किया जा सकता है। किंतु अभी मंगलवार ही है। सुबह जहां बैठते हैं उसके बाद से शाम को आये ंतो आयें नहीं तो भीतर ही रहना है। युवाचार्य महाश्रमण की ही सेवा करें।

दूसरी बात यह है कि चरण स्पर्श वर्जित है। चरण स्पर्श करना है तो महाश्रमण का करें हमारा वर्जित रहेगा इसका विशेश ध्यान दें।

तीसरी बात है कोई शिकायत करना, बातचीत करना, आयोजन देशकाल आदि-आदि बातें सारी प्रार्थना, वार्ता महाश्रमण से करें। इनके द्वारा बात हमारे तक पहुंच जाएगी।

एक बात है कि चाहे भविष्य में कभी हो, विचार गोष्ठी कभी ओर व्याख्यान में करे, करना चाहिए, प्रवचन के समय में भी गोष्ठी हो जिससे लोगों को जानकारी मिले और शांत वातावरण में हो।

मुझे अधिक समय अनेकांत में लगाना है सौहार्द में अनेकांत का प्रयोग कैसे हो उसके साथ तो यह है ही सापेक्ष अर्थशास्त्र, सामंजस्य शांतिपूर्ण सहअस्तितव आदि शारीरिक दृष्टि से मनोविज्ञान आदि-आदि की दृष्टि से और शरीर रसायनों की दृष्टि से क्या-क्या प्रभाव होता है किस प्रकार यह सारे विषयों का अध्ययन और उसके साथ मंत्रों का प्रयोग में भी शक्ति को नियोजित करना है। मंत्र का बहुत लाभ होता है। मत्रों के द्वारा अनेक समाधान होता है।